अल्लाह तआला फरमाता है:

﴿مِنْهَآ أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ ذَٰلِكَ ٱلدِّينُ ٱلْقَيِّمُ
فَلَا تَظْلِمُوا۟ فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ﴾

(अत्तौबा: ३६)

अल्लाह का महीना

मुहर्रम

• हुरमत व अज़मत, • प्रतिष्ठा व अह्काम, • बिदआत व मुनकरात

संग्राहक व सयोजक

अबु अब्दुल्लाह इनायतुल्लाह बिन हफ़ीज़ुल्लाह मदनी

अनुवादक

अब्दुल करीम मोहम्मद उमर सनाबिली

प्रकाशक

सूबाई जमीयत अहले हदीस मुंबई

अल्लाहतआ़ला फरमाता है:

﴿مِنْهَآ أَرْبَعَةٌ حُرُمٌۚ ذَٰلِكَ ٱلدِّينُ ٱلْقَيِّمُۚ فَلَا تَظْلِمُوا۟ فِيهِنَّ أَنفُسَكُمْ﴾

(अत्तौबा: ३६)

अल्लाह का महीना

मुहर्रम

• हुरमत व अज़मत, •प्रतिष्ठा व अहकाम, • बिदआ़त व मुनकरात

संग्राहकवसंयोजक

अबु अ़ब्दुल्लाह इनायतुल्लाह बिन हफ़ीज़ुल्लाह मदनी

अनुवादक

अ़ब्दुल करीम मोहम्मद उ़मर सनाबिली

प्रकाशक

सूबाई जमीयत अहले हदीस़ मुंबई

بسم الله الرحمن الرحيم

الحمد لله رب العالمين، والصلاة والسلام على سيد الأنبياء والمرسلين، نبينا محمد، وعلى آله وصحبه أجمعين، وبعد:

माहे मुहर्रम हिजरी साल का पहला महीना है, इसी से इस्लामी साल का आरंभ होता है, यह प्रतिष्ठा व पवित्रवाले चार महीनों में से एक है, जिसकी प्रतिष्ठा व महानता का सम्मान किया जाना चाहिए, इससे संबधित अहकाम पर अ़मल करना और इनमें विशेष रूप से हर प्रकार के शिर्क से जुड़े हुए, बिदआ़त व मिथकों और हराम की हुई व मुनकर चीज़ों से बचना हर मुसलमान के लिएज़रूरी है। आईए किताब व सुन्नत की रौशनी में इस महीने की पवित्रता व हुरमत, इसके प्रतिष्ठा व समस्याओं और इससे जुड़े हुए बिदआ़त व मिथकों का जाएज़ा लें।

पहला : माहे मुहर्रम की हुरमत व अ़ज़मत :

१-अल्लाह के यहाँ महीनों की संख्या बारह है, जिनमें चार हुरमत वाले हैं:मुहर्रम, रजब, ज़ुल क़ादा और ज़ुल हिज्जा, अल्लाह तआ़ला का उपदेश है:

﴿إِنَّ عِدَّةَ ٱلشُّهُورِ عِندَ ٱللَّهِ ٱثۡنَا عَشَرَ شَهۡرٗا فِي كِتَٰبِ ٱللَّهِ يَوۡمَ خَلَقَ ٱلسَّمَٰوَٰتِ وَٱلۡأَرۡضَ مِنۡهَآ أَرۡبَعَةٌ حُرُمٞۚ ذَٰلِكَ ٱلدِّينُ ٱلۡقَيِّمُۚ فَلَا تَظۡلِمُواْ فِيهِنَّ أَنفُسَكُمۡۚ وَقَٰتِلُواْ ٱلۡمُشۡرِكِينَ كَآفَّةٗ كَمَا يُقَٰتِلُونَكُمۡ كَآفَّةٗۚ وَٱعۡلَمُوٓاْ أَنَّ ٱللَّهَ مَعَ ٱلۡمُتَّقِينَ ٣٦﴾

महिनों की संख्या अल्लाह के नज़दीक किताबुल्लाह में बारह की है, उसी दिन से जब से आकाश व धरती को उसने पैदा किया है, उसमें से चार हुरमत व अदब के हैं। यही सही दीन है, तुम उन महीनों में अपनी जानों पर अत्याचार न करो और तुम तमाम मुशरिकों से जिहाद करो जैसे कि वह तुम सब से लड़ते हैं और जान रखो कि अल्लाह तआला मुत्तक़ियों(आज्ञाकारियों) के साथ है।[१]

अब उन चार महीनों की वज़ाहत करते हुए नबीए करीमﷺका उपदेश है:

"عَنْ أَبِي بَكْرَةَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ، عَنِ النَّبِيِّ ﷺ قَالَ: " الزَّمَانُ قَدْ اسْتَدَارَ كَهَيْئَتِهِ يَوْمَ خَلَقَ اللهُ السَّمَوَاتِ وَالْأَرْضَ، السَّنَةُ اثْنَا عَشَرَ شَهْرًا، مِنْهَا أَرْبَعَةٌ حُرُمٌ، ثَلَاثَةٌ مُتَوَالِيَاتٌ: ذُو الْقَعْدَةِ وَذُو الْحِجَّةِ وَالْمُحَرَّمُ، وَرَجَبُ مُضَرَ، الَّذِي بَيْنَ جُمَادَى وَشَعْبَانَ".

अबु बकरा ﷺ नबी करीम ﷺ से रिवायत करते हैं कि आप ने फरमाया: ज़माना घूम कर अपनी उसी हालत पर आ चुका है, जिस दिन अल्लाह तआला ने आस्मानों और ज़मीन को पैदा किया था, साल मे बारह महीने हैं, उनमें से चार हुरमत वाले हैं, तीन निंरतर हैं: ज़ुल -क़ादा, ज़ुल हिज्जा और मुहर्रम, और चौथा मुज़रवालों [वंश का नाम]का रजब, जो जुमादा (स़ानिया) और शाबान के बीच आता है।[२]

किंतुयह स्पष्ट रहे कि आयते करीमा का अर्थ यह नहीं है कि अन्य महीनों में अत्याचार,दुष्टता और पाप करना जाएज़ है, बल्कि वह तो सदा ही वर्जित है, परंतु इन महीनों में इस की गंभीरताऔर अधिक बढ़ जाती है,अत: अ़ल्लामा इब्ने जरीर त़बरी रहिमहुल्लाह ने आयते करीमा की व्याख्या (तफ़सीर) में क़तादा रहिमहुल्लाह के यह कथन नक़ल किया है:

---

[१] सूरह तौबा: ३६ ।

[२]बुखारी:३१९७, मुस्लिम:१६७९।

" إِنَّ الظُّلْمَ فِي الْأَشْهُرِ الْحُرُمِ أَعْظَمُ خَطِيئَةً وَوِزْرًا مِنَ الظُّلْمِ فِيمَا سِوَاهَا، وَإِنْ كَانَ الظُّلْمُ عَلَى كُلِّ حَالٍ عَظِيمًا، وَلَكِنَّ اللهَ يُعَظِّمُ مِنْ أَمْرِهِ مَا يَشَاءُ"

हराम महीनों में अन्याय व अत्याचार अन्य महीनों के मुक़ाबले में बहुत ही गंभीर हो जाता है, हालाँकि अत्याचार तो हर हाल में गंभीर ही है, परंतु अल्लाह तआला अपने जिस मामला को चाहता है सम्मान व अ़ज़मत वाला बनाता है।[१]

हाफिज इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह ने इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा की बात कोब्यान किया है:

"... وَجَعَلَ الذَّنْبَ فِيهِنَّ أَعْظَمَ، وَالْعَمَلَ الصَّالِحَ وَالْأَجْرَ أَعْظَمَ"

अल्लाह तआला ने इन चार महीनों मे पाप को बहुत बड़ा कर दिया है, और नेक व भले कार्य और इसके पुण्य को भी महान कर दिया है।[२]

अथवा खुद (हाफ़िज़ इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह) फरमाते हैं:

"نَهَى تَعَالَى عَنِ الظُّلْمِ فِي الْأَشْهُرِ الْحُرُمِ، وَإِنْ كَانَ فِي جَمِيعِ السَّنَةِ مَنْهِيًّا عَنْهُ، إِلاَّ أَنَّهُ فِي الْأَشْهُرِ الْحُرُمِ آكَدُ"

अल्लाह तआला ने हराम महीनों में ज़ुल्म से मना फरमाया है, हालाँकि ज़ुल्म तो पूरे साल ही में निषेध है, किंतु हराम महीनों में अतिरिक्त सख़्ती के तौर पर वर्जित है।[३]

२- "चार महीनों की हुरमत" का अर्थ:

अ़ल्लामाअ़ब्दुर्रहमान बिन नासिर साअ़दी फरमाते हैं:

---

[१]तफसीरे तबरी:१४/२३८/१६६९८ ।

[२]तफ़सीरे इब्ने कसीर: ४/१४८।

[३]तफसीर इब्ने कसीर: १/५४५ ।

इन्हें हुरमत वाला इस लिए कहा गया है कि इनकी प्रतिष्ठा व सम्मान अधिक है एंव इन्में मार-काट हराम है। [१]

अथवाइसकी दो टोक व्याख्या ख़ुदपवित्र आयत के संदर्भ (सियाक़) मे मौजूद हैं, कि अल्लाह ने फरमाया: "इन्में अपने आप पर अत्याचार न करो" यानी अत्याचार व अन्याय, पाप व अवज्ञा और मार-काट आदि कर के अपने आपको प्रताड़ित न करो, कि इन महीनों की हुरमत का ध्यान रखना ही ठोस दीन है।"

इमाम इब्ने कसीर रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:

इन महीनों का आदर व सम्मानअरब के लोग ज़मान-ए -जाहिलिय्यात [इस्लाम से पूर्व का समय]में भी किया करते थे, इनके अधिकतर का यहीविश्वास था, लेकिन इनमें कुछ लोग थे, जिन्हें "بَسْل" "बस्ल" कहा जाता था, वह शिद्दत बरतते थे, साल के आठ महीनों को हराम समझते थे। [२]

अ़ल्लामा बदरुद्दीन ऐ़नी फरमाते हैं:

"حُرُم" "हुरुम" हराम की बहुवचन है, अर्थात इन महीनों में मार-काट और लड़ाई आदी हराम है। [३]

यही कारण है कि अ़रब के लोग अपनी सारी संगदिली व रक्तपात(सफ़्फ़ाकिय्यत) के बावजूद हराम महीनों में किसी से छेड़ छाड़ नहीं करते थे, अत: अहमद इब्राहीम अश-शरीफ़ लिखते हैं:

"وكان الرجل لو لقي قاتل أبيه في الشهر الحرام أو في الحرم لم يتعرض له"

---

[१]तैसीरुल करीमिर रहमान, पृ.३३६ ।

[२]तफ़्सीर इब्ने कसीर: ४/१४८ ।

[३]उमदतुल क़ारी शरह सहीहिल बुख़ारी: २१/ १४९।

यदि व्यक्ति को हराम महीना या हरम में अपने पिताका क़ातिल मिल जाता तो भी वह उससे छेड़ छाड़ नहीं करता। [१]

वास्तव में यह चीज़ अहले जाहिलियत के यहाँ दीने इब्राहीमी के बाक़ी बचीहुई चीज़ों में से थी।

३-माहे मुहर्रम के नाम रखने का कारण:

ह़ाफ़िज़ इब्ने कस़ीर रहिमहुल्लाह मुहर्रम का नामकरण के बारे में फरमाते हैं:

इल्मुद्दीन सख़ावी रहिमहुल्लाह कहते हैं कि: मुहर्रम का नाम मुहर्रम इसलिए है कि वह हराम महीना है, परंतु मेरे निकट यह है कि इसकी हुरमत केकड़े निर्देश के लिए इसका नाम मुहर्रम रखा गया है, क्योंकि अ़रब के लोग इसे आगे पीछे किया करते थे, एक साल इसे हलाल समझते थे और एक साल हराम। [२]

४-हुरमत का अर्थ और इसकाख़्याल रखने का महत्व :

हुरमत : हर उस चीज़ को कहते है जो प्रतिष्ठित हो, और उसे बरबाद करने से अल्लाह ने मना फरमाया हो, इसी प्रकार से सारे पाप व गुनाह भी हैं, जिनसे अल्लाह ने फरमाया है, इसी प्रकार हुरमत उसे भी कहते हैं जिसे करना अनिवार्य और उसमें कोताही करना वर्जित हो।

अ़ल्लामा शौकानीरहिमहुल्लाह फरमाते हैं:

"وَالْحُرْمَةُ: مَا مَنَعَ الشَّرْعُ مِنَ انْتِهَاكِهِ".

हुरमत उसे कहते हैं, जिसे पामाल करने से शरीअ़त ने मना किया हो। [३]

अ़ल्लामा साअ़दीरहिमहुल्लाह फरमाते हैं:

---

[१] मक्का वल मदीना फ़िल-जाहिलिय्यति व अ़हदि रसूल ﷺ, पृ. १६२, एंव देखिए: असवाक़ुल अ़रब फ़िल जाहिलिय्यति वल इस्लाम: सईद बिन मुहम्मद अफ़ग़ानी, पृ:७०।

[२] तफ़्सीर इब्ने कस़ीर; ४/१४६।

[३] फ़त्हुल क़दीर: शौकानी:१/२२१।

"كل شيء يحترم من شهر حرام، أو بلد حرام، أو إحرام، أو ما هو أعم من ذلك، جميع ما أمر الشرع باحترامه".

हुरमत: हर मुहतरम चीज़ को कहते हैं चाहे वह हराम हो, या शहर हराम, या एहराम, या इससे भी साधारण अर्थ, यानी वह सारी चीजें शरीअ़त ने जिसके एहतिराम का हुक्म दिया हो।[१]

अ़ल्लामा बग़वी रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:

"يعني مَعَاصي اللهِ وَمَا نَهَى عَنْهُ، وَتَعْظِيمُهَا تَرْكُ مُلابَسَتِهَا"

हुरमत: अर्थात अल्लाह की नाफरमानी और मना किए हुए मामला, और उनका आदर का अर्थ यह है कि इसमें न पड़ा जाए।[२]

इमाम इब्नुल क़य्यिम रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:

"والصواب أن الحرمات تعم هذا كله، وهي جمع (حرمة) وهي ما يجب احترامه وحفظه، من الحقوق، والأشخاص، والأزمنة، والأماكن، فتعظيمها توفيتها حقها، وحفظها من الإضاعة".

उचित बात यह है कि हुरमतों में पूर्ववर्णित सारी बातें शामिल हैं, हुरमात हुरमत काबहुवचन है, और हुरमत हर उस चीज़ को कहते हैं, जिसकाआदर और सुरक्षा अनिवार्य हो, चाहे अधिकार हों, कई लोग हों, या स्थान हों, और उनकेसम्मानव प्रतिष्ठा का अर्थ यह है कि उन्हें पूरा पूरा अधिकार दिया जाए और उनका उलंघ्घन होने से बचाया जाए।[३]

---

[१] तैसीरुल करीमिर रहमान, पृ.: ८९।

[२] तफ़्सीरुल बग़वी: ५/३८३, एंव देखिए: तफ़्सीरे इब्ने कसीर: ५/४१९

[३] मदारिजुस्सालिहीन: २/७४।

और हुरमतों का ध्यान रखना और उसकासम्मान करना अल्लाह तआला कासम्मान व आदर का हिस्सा [है] एंवपरहेज़गारी व अल्लाह वालाहोने और नेकी व भलाई का प्रमाण है, अल्लाह तआला का उपदेश है:

﴿ذَٰلِكَۖ وَمَن يُعَظِّمۡ حُرُمَٰتِ ٱللَّهِ فَهُوَ خَيۡرٞ لَّهُۥ عِندَ رَبِّهِۦ﴾

यह है और जो कोई अल्लाह के निर्धारित किए प्रतिबंधों का आदर करे उसके अपने लिए उसके रब के पास बेहतरी है।[१]

﴿ذَٰلِكَۖ وَمَن يُعَظِّمۡ شَعَٰٓئِرَ ٱللَّهِ فَإِنَّهَا مِن تَقۡوَى ٱلۡقُلُوبِ ٣٢﴾

यह सुन लिया अब और सुनो! अल्लाह की निशानियों का जो आदर करे, तो यह नि:संदेहउसके दिलों की आज्ञाकारी केकारण है।[२]

एंव उपदेश है:

﴿يَٰٓأَيُّهَا ٱلَّذِينَ ءَامَنُواْ لَا تُحِلُّواْ شَعَٰٓئِرَ ٱللَّهِ وَلَا ٱلشَّهۡرَ ٱلۡحَرَامَ وَلَا ٱلۡهَدۡيَ وَلَا ٱلۡقَلَٰٓئِدَ﴾

ऐ ईमान वालो! अल्लाह तआला के निशानियों का अनादर न करो, न आदरके महीनों का, न हरम में कुरबान होने वाले और पट्टे पहनाए गए जानवरों की [जो निशान देकार मिना में ले जाते हैं] और न जो ख़ानाए काबा की तवाफ को जा रहे हों।[३]

इसी तरह अल्लाह का उपदेश है

﴿ ٱلشَّهۡرُ ٱلۡحَرَامُ بِٱلشَّهۡرِ ٱلۡحَرَامِ وَٱلۡحُرُمَٰتُ قِصَاصٞۚ فَمَنِ ٱعۡتَدَىٰ عَلَيۡكُمۡ فَٱعۡتَدُواْ عَلَيۡهِ بِمِثۡلِ مَا ٱعۡتَدَىٰ عَلَيۡكُمۡ﴾

[१] अल-हज्ज:३०।

[२]अल- हज्ज: ३२ ।

[३] अल-माएदा:२ ।

प्रतिष्ठितमहीनें सम्मानित महीनों के बदले हैं और हुरमतें अदले बदले की हैं जो तुम पर अत्याचार करे तुम भी उस पर उसी के समानअत्याचार करो जो तुम पर की है।[१]

इसी वर्गसे एक मोमिन की जान व माल और इज़्ज़त की हुरमत भी है, जो काबा से भी महान है, मुलाहजा फरमाएं:

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا قَالَ: نَظَرَ رَسُولُ اللهِ ﷺ إِلَى الْكَعْبَةِ، فَقَالَ: "مَرْحَبًا بِكِ مِنْ بَيْتٍ مَا أَعْظَمَكِ وَأَعْظَمَ حُرْمَتَكِ،وَلَلْمُؤْمِنُ أَعْظَمُ حُرْمَةً عِنْدَ اللهِ مِنْكِ، إِنَّ اللهَ حَرَّمَ مِنْكِ وَاحِدَةً وَحَرَّمَ مِنَ الْمُؤْمِنِ ثَلاَثًا: دَمَهُ، وَمَالَهُ، وَأَنْ يُظَنَّ بِهِ ظَنَّ السَّوْءِ".

इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने ख़ाना-ए-काबा की ओर निगाह उठाई और फरमाया: “तुझे अल्लाह का घर होना मुबारक हो, तू निहायत प्रतिष्ठा वाला है और तेरा आदर व सम्मान कितने उच्च्चस्तर का है, परंतु एक मोमिन का सम्मान अल्लाह के यहाँ तुझसे भी बढ़ कर है, अल्लाह तआ़ला ने तुझे केवल एक पहलू से सम्मानित बनाया है, जब्कि ऐक मोमिन को तीन पहलूओं से हुरमत वाला क़रार दिया है: उसकी जान, उसका माल और यह कि उसके बारे में बदगुमानी व बुरा ख्याल रखा जाए (अर्थात उसको अपमानित किया जाए)”।[२]

दूसरा : माहे मुहर्रम के फ़ज़ाएल व अहकाम :

१-माहे मुहर्रम की श्रेष्ठता :

वर्णित आयत व हदीस़ से हराम महीनों की हुरमतव फजीलत वाज़ेह है, और इनमें माहे रमज़ान के पश्चात माहे मुहर्रम सबसे अधिक प्रतिष्ठित महीना है, अत:हाफिज़ इब्ने रजब ने हसन बस़री से नक़ल किया है कि इन्होंने फरमाया:

---

[१] अल-बकरा:१९४।

[२]शिअबुल ईमान बैहकी (९/७५, हदीस: ६२८०, देखिए: अस्सहीहा /१२४८, हदीस:३४२०)

“अल्लाह तआला ने साल का आरम्भ व अंत हराम महीना से किया है, इसलिए माहे रमज़ान के बाद अल्लाह के यहाँ मुहर्रम से अधिक प्रतिष्ठा वाला महीना कोई नहीं, इसकी अत्याधिकमनाही व सम्मान(शदीद हुरमत) के कारण इसे “ شَهْرُ اللهِ الأَصَمّ ” (अल्लाह का गूंगा महीना) कहा जाता था ।”[१]

इस सिलसिला में एक रिवायत इमाम नसाई ने सुनने कुबरा में नक़लफ़रमाई है कि अबू ज़र रज़ियल्लाहु अन्हु बयान करते हैं:

"قُلْتُ: يَا رَسُولَاللهِ، أَيُّ الرِّقَابِ أَزْكَى؟ وَأَيُّ اللَّيْلِ خَيْرٌ؟ وَأَيُّ الْأَشْهُرِ أَفْضَلُ؟ فَقَالَ لِيْ: "أَزْكَى الرِّقَابِ أَغْلاَهَا ثَمَنًا، وَخَيْرُ اللَّيْلِ جَوْفُهُ، وَأَفْضَلُ الْأَشْهُرِ شَهْرُ اللهِ الَّذِي تَدْعُونَهُ الْمُحَرَّمَ

कि मैंने रसूलुल्लाह से ﷺ पूछा: सबसे बेहतर दास कौन सा है? सबसे बेहतर रात कौनसी है?और सबसे अफ़ज़ल महीना कौन सा है? तो आप ﷺ ने मुझ से फ़रमाया: सबसे बेहतर दास वह है जो सबसे क़ीमती हो, और रात का बेहतरीन हिस्सा मध्य हिस्सा है, और सबसे अफ़ज़ल महीना अल्लाह का वह महीना जिसे तुम मुहर्रम कहते हो।[२]

हाफ़िज़ इब्ने रजब फरमाते हैं:

यह मुतलक़ हदीस़ रमज़ान के पश्चात पर निर्भर है।[३]

इस महीना की प्रतिष्ठा का एक पहलू यह भी है कि यह अल्लाह तआला के नाम से सम्बन्धित होनेसे सम्मानित है, अत:हाफ़िज़ इब्ने रजब फ़रमाते हैं:

---

[१]लताईफुल मआरिफ: पृ.: ३४।

[२]अस्सुनन अल-कुबरा लिन्नासाई (४/२३३, हदीस़: ४२०२) एंव देखिए: जामेअ अल-मसानीद: १६/११४, हदीस़:१२२७१), व मुसनद अहमद, (३५/४४०) एंव अत-तारीख़ अल-कबीर लिल बुख़ारी (२/४५/१६३५)।

[३]लत़ाईफ़ुल मआरिफ़,पृ.:३४।

इस महीना को अल्लाह के नबी ﷺ ने अल्लाह का महीना कहा है, यह निसबतइसके बड़ाई व सम्मान पर चिन्ह है, क्योंकि अल्लाह तआला अपने खास संसार की चीज़ों को ही अपनी ओर मनसूब फ़रमाता है, मोहम्मद ﷺ, इब्राहीम, इस्हाक, याक़ूब और अन्य सन्देष्टा अलैहिमुससलाम को अपनी दासता व भक्ति की ओर मनसूब किया है, इसी प्रकार अपने घर काबा और स़ालेह अलैहिस्सलाम की ऊँटनी को अपनी ओर मनसूब फ़रमाया है ।[१]

२-माहे मुहर्रम के रोज़ों की फ़ज़ीलत:

इस माह के रोज़ों की फ़ज़ीलत यह है कि इसका रोज़ा माहे रमज़ान के पश्चात सबसे अफ़ज़ल रोज़ा है, नबी करीम ﷺ का उपदेश है:

"أَفْضَلُ الصَّلاَةِ، بَعْدَ الصَّلاَةِ الْمَكْتُوبَةِ، الصَّلاَةُ فِي جَوْفِ اللَّيْلِ، وَأَفْضَلُ الصِّيَامِ بَعْدَ شَهْرِ رَمَضَانَ، صِيَامُ شَهْرِ اللهِ الْمُحَرَّمِ"

फ़र्ज़ नमाज़ के पश्चात सबसे अफ़ज़ल नमाज़ रात की नमाज़ (क़ियामुल्लैल) है, और रमज़ान के पश्चात सबसे फ़ज़ीलत वाला रोज़ा अल्लाह के महीने मुहर्रम का रोज़ा है।[२]

३-आशूरा[१०वीं मुहर्रम] के दिन का रोज़ा और उसकी हिकमत:

इस महीना की एक विशेषप्रतिष्ठा यह है कि इसमें आशूरा का दिन है, जिसमें हक्क को असत्य पर खुली स्पष्ट जीत प्राप्त हुई थी, अर्थात मूसा अलैहिस्सलाम और आप के साथियों को मुक्ति मिली थी और फ़िरऔन और फ़िरऔनीयों को अल्लाह ने डुबो दिया था।

عَنِ ابْنِ عَبَّاسٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُمَا، قَالَ قَدِمَ النَّبِيُّ ﷺ الْمَدِينَةَ فَرَأَى الْيَهُودَ تَصُومُ يَوْمَ عَاشُوْرَاءَ، فَقَالَ: "مَا هَذَا؟" قَالُوْا: هَذَا يَوْمٌ صَالِحٌ هَذَا يَومٌ نَجَّى اللهُ بَنِي

[१]लत़ाइफ़ुल मआरिफ़, पृ.: ३६।

[२]सहीह मुस्लिम: २/८२१, हदीस: ११६३ ।

إِسْرَائِيلَ مِنْ عَدُوِّهِمْ، فَصَامَهُ مُوسَى، قَالَ: "فَأَنَا أَحَقُّ بِمُوسَى مِنْكُمْ"، فَصَامَهُ، وَأَمَرَ بِصِيَامِهِ".

इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा बयान करते हैं कि नबी करीम ﷺ मदीना तशरीफ लाए तो आपने यहुदियों को अ़ाशूरा का रोज़ा रखते हुए देखा, पूछा: “यह क्या है?” लोगों ने कहा: यह बड़ा अच्छा दिन है, इसमें अल्लाह तअ़ाला ने बनी इस्राईल को इनकों दुश्मनों से मुक्ति दी थी, अपितु मूसा अ़लैहिस्सलाम ने रोज़ा रखा था, आप ﷺ ने फरमाया: “हम मूसा अ़लैहिस्सलाम के तुम से अधिक हक़दार हैं” अत: आपने स्वंय रोज़ा रखा और लोगों को रोज़ा रखने का हुक्म दिया।[१]

और स़हिहैन की दूसरी रिवायत में है:

"قَالُوا: هَذَا يَوْمٌ عَظِيمٌ، وَهُوَ يَوْمٌ نَجَّى اللهُ فِيهِ مُوسَى، وَأَغْرَقَ آلَ فِرْعَوْنَ، فَصَامَ مُوسَى شُكْرًا لِلَّهِ".

कि उन्होंने कहा: यह बड़ा प्रतिष्ठित दिन है, इसमें अल्लाह तअ़ालाने मूसा अ़लैहिस्सलाम को मुक्ति दी थी और फिरऔ़न वालों को डुबो दिया था, इसीलिए मूसा अ़लैहिस्सलाम ने अल्लाह के शुक्रिया में रोज़ा रखा था।[२]

और इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फरमाते हैं:

"مَا رَأَيْتُ النَّبِيَّ ﷺ يَتَحَرَّى صِيَامَ يَوْمٍ فَضَّلَهُ عَلَى غَيْرِهِ إِلاَّ هَذَا الْيَوْمَ، يَوْمَ عَاشُورَاءَ، وَهَذَا الشَّهْرَ يَعْنِي شَهْرَ رَمَضَانَ"

[१]सहीहुल बुखारी: ३/४४, हदीस़: २००४।

[२]स़हीह बुख़ारी: ४/१५३, हदीस़:३३९७, स़हीह मुस्लिम: २/७९६, हदीस़: ११३० ।

मैंने रसूलुल्लाह ﷺ को किसी रोज़ा के दिन की तलाश करते हुए नहीं देखा, जिसे आपने दूसरे दिन फर फ़ज़ीलत दी हो, सिवाए इस दिन अर्थात आशूरा के दिन, और इस महीना अर्थात माहे रमज़ान के।[१]

४- आशूरा के दिन की तारीख़:

आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा बयान करती हैं कि जाहिलियत में क़ुरैश के लोग आशूरा का रोज़ा रखते थे, और रसूलुल्लाह ﷺ भी इस्लाम से पहले यह रोज़ा रखते थे, मदीना आए तो भी यह सिलसिला जारी रहा, अलबत्ता रमज़ान के रोज़ों की अनिवार्यता के पश्चात आशूरा का रोज़ा छोड़ दिया, लिहाज़ा जो चाहे रखे जो चाहे न रखे।[२]

इससे मालूम होता है कि जाहिलियत के ज़माने ही से यह दिन और उसकीपवित्रताअरबों के यहाँ प्रसिद्ध थी, और इस दिन वह महत्वपूर्णऔर मुबारक कामों को अंजाम दिया करते थे, उदाहरण के तौर पर उस दिन वह काबा को ग़िलाफ़ पहनाया करते थे, जैसे आज अरफ़ा के दिन को ग़िलाफ़ पहनाया जाता है, अत:उम्मुल मोमिनीन आईशा रज़ियल्लाहु अन्हा आशूरा के बारे में फरमाती हैं:

"كَانُوا يَصُومُونَ عَاشُورَاءَ قَبْلَ أَنْ يُفْرَضَ رَمَضَانُ، وَكَانَ يَوماً تُسْتَرُ فِيهِالْكَعْبَةُ".

रमज़ान की फ़रज़ियत से पहले लोग आशूरा का रोज़ा रखते थे, और यही दिन था जिस दिन ख़ाना-ए-काबा को ग़िलाफ़ पहनाया जाता था।[३]

५- आशूरा के रोज़ा का हुक्म:

---

[१] सहीह बुख़ारी: ३/४४, हदीस: २००६ ।

[२] बुख़ारी: ३/४४, हदीस:२००२।

[३] सहीह बुख़ारी: २/१४८, हदीस: १५९२ ।

अहले इल्म के स़हीह़ क़ौल के अनुसार हिजरत के पश्चात, आरंभ में ऩआशूरा का रोज़ा अनिवार्य था, क्योंकि ऩआशूरा के रोज़ा का हुक्म अनेक अहादीस़ में स़ाबित है, अत: सलमा बिन अकवाऩअ रज़ियल्लाहु ऩअन्हु बयान करते हैं:

"أَمَرَ النَّبِيُّ ﷺ رَجُلاً مِنْ أَسْلَمَ: "أَنْ أَذِّن فِي النَّاسِ: أَنَّ مَنْ كَانَ أَكَلَ فَلْيَصُمْ بَقِيَّةَ يَوْمِهِ، وَمَنْ لَمْ يَكُنْ أَكَلَ فَلْيَصُمْ، فَإِنَّ الْيَومَ يَوْمُ عَاشُورَاءَ".

कि नबीए करीम ﷺनेवंश (क़बील-ए-) असलम के एक व्यक्ति को हुक्म दिया कि लोगों में ऐलानकर दे: कि जिसने खाना खा लिया है वह बक़िय्या दिन रोज़ा रखे और जिस ने नहीं खाया है वह न खाए, बल्कि रोज़ा रखे, क्योंकि आज ऩआशूरा का दिन है।[१]

परंतु ऩआशूरा के दिन का रोज़े का यह अनिवार्य होना एक ही साल रहा, अर्थात सन्न दो हिजरी के आरंभ में, फिर इसी साल रमज़ान के रोज़ों की फ़रज़िय्यत होगई तो उसका वुजूब रद्द हो गया, केवल इसतिहबाबी["استحباب"वहकार्यजिसके करनेमेंपुण्य होपरंतुकोईनुक़्साननहो]हैसियत बाकी रही, जैसा कि अनेक रिवायात से स्पष्ट है।

६- ऩआशूरा के रोज़े की फ़ज़ीलत:

१- एक साल के छोटे गुनाहों को मिटा देता है:

"أَنَّ رَسُولَ اللهِ ﷺ سُئِلَ عَنْ صَوْمِ عَرَفَةَ؟ فَقَالَ: "يُكَفِّرُ السَّنَةَ الْمَاضِيَةَ وَالْبَاقِيَةَ" قَالَ: وَسُئِلَ عَنْ صَومِ يَوْمِ عَاشُورَاءَ؟ فَقَالَ: "يُكَفِّرُ السَّنَةَ الْمَاضِيَةَ".

कि रसूलुल्लाह ﷺसे ऩअरफ़ा का दिन के बारे में पूछा गया तो आप ने फरमाया : “वह पिछले साल और अगले साल के पाप को मिटा दिता है” और आपसे ऩआशूरा के रोज़े

[१]स़हीह बुख़ारी: ३/४४, हदीस़:२००७ ।

के बारे में पूछा गया? तो फ़रमाया : “वह पिछले एक साल के गुनाहों को मिटा देता है”।[१]

स्पष्ट रहे कि फ़ज़ीलत की इस हदीस़ और इस जैसी अन्य अहादीस़ से केवल छोटे पापों की माफ़ी होती है, बड़े पाप की नहीं, जैसा कि दलीलों की रौशनी में अहले सुन्नत व जमाअ़त का दृष्टि भाव (मौक़िफ़) है, क्योंकि हदीस़ों मे बड़े पाप से दूर रहने की शर्त लगाई गई है:

जैसा कि “مَا لَمْ تُغْشَ الْكَبَائِرُ”[२]

जब तक कि बड़े गुनाहों को न करता हो।

और“إِذَا اجْتَنَبَ الْكَبَائِرَ”[३]

शर्त यह कि बड़े गुनाहों से बचे।

और“مَا لَمْ يُؤْتِ كَبِيرَةً”[४]

जब तक बड़े पाप न करे। से स्पष्ट है।

२- नबी -ए -करीम ﷺ ने इसका रोज़ा रखा और लोगों को रोज़ा रखने को प्रेरणा दी, जैसा कि अनेक अहादीस़ में स़ाबित है।

३- स़हाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम इस रोज़ा का एहतिमाम करते थे और अपने बच्चों को भी रखवाते थे, अत: रबीअ़ बिनतेमुअ़व्विज़ रज़ियल्लाहु अ़न्हा फरमाती हैं:

---

[१]स़हीह मुस्लिम २/ हदीस़: ११६३

[२]मुस्लिम: १/२०९, हदीस़: २३३

[३]मुस्लिम: १/२०९, हदीस़: २३३।

[४]मुस्लिम:१/ २०६, हदीस़: २२८।

"... فَكُنَّا، بَعْدَ ذٰلِكَ نَصُومُهُ، وَنَصُومُ صِبْيَانَنَا الصِّغَارَ مِنْهُمْ إِنْ شَاءَ اللهُ، وَتَذْهَبَ إِلَى الْمَسْجِدِ، فَنَجْعَلُ لَهُمُ اللُّعْبَةَ مِنَ الْعِهْنِ، فَإِذَا بَكَى أَحَدُهُمْ عَلَى الطَّعَامِ أَعْطَيْنَاهَا إِيَّاهُ عِنْدَ الْإِفْطَارِ".

अत: आ़शूरा का रोज़ा हम खुद भी रखती थीं, और अल्लाह की मर्ज़ी से अपने छोटे बच्चों को भी रखवाती थीं, और मस्जिद जातीं तो उनके लिए ऊन का खिलौना ले आतीं, जब उनमें से कोई खाने के लिए रोता तो उसे खिलाौना दे दिया करतीं यहाँ तक कि इफ़तार का समय जो जाता।

४- यह रोज़ा मूसा कलीमुल्लाह अ़लैहिस्सलाम और आप के मोमिन साथियों की नजात जैसी अल्लाह की नेअ़मत के शुर्किया में है, जिसे नबी करीम ﷺ ने अधिक अधिकार व प्रथमता की बुनियाद पर अपनी सुन्नत क़रार दिया है।

७- आ़शूरा के दिन के कायदे व चरण:

आ़शूरा दसवीं तारीख़ को कहा जाता है, जिसके रोज़े केशास्त्रिय होने का वर्णन हुआ, अत: दलीलों की रोशनी में इसके निम्नलिखित चरण हैं :

१- मुसतहब यह है कि दसवीं के साथ नवीं तारीख का रोज़ा भी रखा जाए, चुनाचे इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा फरमाते हैं :

"حِيْنَ صَامَ رَسُولُ اللهِ ﷺ يَوَمَ عَاشُورَاء وَأَمَرَ بِصِيَامِهِ قَالُوا: يَا رَسُولَ اللهِ إِنَّهُ يَوْمٌ تُعَظِّمُهُ الْيَهُودُ وَالنَّصَارَى. فَقَالَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ: "فَإِذَا كَانَ الْعَامُ الْمُقْبِلُ إِنْ شَاءَ اللهُ صُمْنَا الْيَوْمَ التَّاسِعَ" قَالَ: فَلَمْ يَأْتِ الْعَامُ الْمُقْبِلُ، حَتَّى تُوُفِّيَ رَسُوْلُ اللهِ ﷺ "

जब रसूलुल्लाह ﷺ ने आशूरा का रोज़ा रखा और उसका हुक्म दिया, तो लोगों ने कहा: ऐ अल्लाह के रसूल! यहूदो नस़ारा इस दिन का बड़ासम्मान करते हैं, अत: रसूलुल्लाह ﷺ

ने फरमाया: “इन शा अल्लाह हम नवीं तारीख का रोज़ा भी रखेंगे” फरमाते हैं:परंतु आने वाले साल के आने से पहले ही रसूलुल्लाह ﷺ की वफ़ात हो गई।[१]

२- इसी प्रकार विरोध की दूसरी शक्ल यह है कि दसवीं के साथ ग्यारवीं तारीख का रोज़ारखा जाए, जैसा कि इब्ने अ़ब्बास रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा बयान करते हैं कि रसूलुल्लाह ﷺ ने फरमाया:

"صُومُوا يَوْمَ عَاشُورَاءَ، وَخَالِفُوا فِيْهِ الْيَهُودَ، صُومُوا قَبْلَهُ يوماً أَوْ بَعْدَهُ يوماً"

आ़शूरा का दिन रोज़ा रखो, और उसमें यहूदियों की मुख़ालिफ़त करो, इसके पहले एक दिन रोज़ा रखो, या उसके पश्चात एक दिन रोज़ा रखो।[२]

३- इसी प्रकार मुख़ालिफ़त की एक तीसरी शक्ल यह है कि दसवीं के साथ और ग्यारहवीं दोनों तारीख़ों का रोज़ा रखा जाए, जैसा की बयान की गई हदीस़ की कुछ रिवायतों में“अव”“أَوْ”(या) के बजाए “व”“وَ” (और) का शब्द है, अर्थात एक दिन पहले और एक दिन पश्चात का रोज़ा रखो। [३]

इस प्रकार आ़शूरा का रोज़े के तीन मरातिब हुए: नवीं व दसवीं, दसवीं व ग्यारवीं, और नवीं, दसवीं और ग्यारहवीं, अलबत्ता बज़ाहिर मालूम होता है कि सर्वश्रेष्ठ चरण पहला है, क्योंकि नबी करीम ﷺ ने इसकी तमन्ना फरमाई थी, और ज़्यादा तर हदीस़ें इसी बारे में हैं, अल्लाह तआ़ला सबसे बड़ा ज्ञानी है।

---

[१]सहीह मुस्लिम (बबब२/७९७, हदीस़:११३४) ।

[२]मुसनद अहमद तबअ़: अरि्रसाला: ४/५२, हदीस़:२१५४, व सुनन कुबरा बैहक़ी, हदीस़: ८४०६, व शिअ़बिल ईमान: ३५११, व स़हीह इब्ने ख़ुज़ैमा, हदीस़:२०९५)। इस हदीस़ के स़हीह व ज़ईफ़ होने में अहले ईल्म का मतभेद है, अ़ल्लामा अलबानी और मुसनद के शोधकर्ताओं (मुहक़्क़िक़ीन) ने इसको ज़ईफ़ क़रार दिया है, जब्कि मुसनद अहमद के शोधकर्ता (मुहक़्क़िक़) और टीकाकार (शारेह) अ़ल्लामा अहमद शाकिर ने ह़सन क़रार दिया है, (देखिए: मुसनद अहमद तबअ: अहमद शाकिर : २/५४६, हदीस़: २१५४), एंव अ़ल्लामा अलबानी रहिमहुल्लाह फरमाते हैं : इब्ने अबी लैला के बुरे ह़ाफिज़े के कारण इस (मरफ़ूअ़) की सनद ज़ईफ़ है, जब्कि अ़त़ा ने इब्ने अ़ब्बास से मौक़ूफ़न रिवायत किया है, और इसकी सनद तहावी और बैहक़ी के यहाँ स़ह़ीह़ है। देखिए: इब्ने ख़ुज़ैमा: ३/२९०/२०९५)।

[३]इसे अकेले इब्ने अबी लैला ने रिवायत नहीं किया है, बल्कि स़ालेह बिन अबू स़ालेह बिन हय्य ने उनकी मुताबअ़त की है, जैसा कि हाफ़िज़ इब्ने ह़जर रह़िमहुल्लाह ने फरमाया है, इसीलिए रिवायत क़ाबिले अ़मल है।देखिए: इतह़ाफ़ुल खियरतिल महरा (३/८१/२२२५), एंव देखिए: मजमूअ़ फतावा इब्ने बाज़: १५/३९९, व ४०२, व मजमूअ़ फ़तावा व रसाईलुल उस़ैमीन: २०/३८, और इस्लाम सवाल व जवाब: शैख़् स़ालेह अल-मुनज्जिद, फतवा: १२८४२३)।

परंतु इमाम इब्नुल क़य्यिम फरमाते है : सबसे मुकम्मल दर्जानवीं, दसवीं और ग्यारहवीं का है, इसके पश्चात नवीं दसवीं का, और इसके पश्चात केवल दसवीं का, रहा केवल नवीं का रोजा तो यह अहादीस़ व आस़ार की कम समझ काप्रमाण है। [१]

तीसरा : माहे मुहर्रम के बिदआत व मुनकरात :

इस्लाम धर्म में मुहर्रम के महीना का पूर्व वर्णित बातों के अतिरिक्त किसी और चीज़ से कोई सम्बन्ध नहीं है, मगर अफसोस कि उम्मत में अहले बैते रसूल से प्रेम के झूठे दावेदार रवाफ़िज़, और उनके खिलाफ दुश्मनी की दीवार खड़ी करने वाले नवास़िब और अन्यायी (बात़िल परसतों) के प्रोपैगंडों और जिहालत व ला इल्मी के कारण बिदआत व ख़ुराफ़ात का इस कदरतुफानबपा हुआ कि सुन्नत व हक़ीक़त खो कर रह गई, और बिदआत व हराम बातों ने उनकी जगह ले ली, सिवाए उसके अल्लाह जिस पर रहम करे।निम्नलिखित में कुछ बिदआतों मुनकरात का ज़िक्र किया जाता है:

१-दुख व चिंता और मृतक के लिए रोना पीटने की बिदअत (रवाफ़िज़):

नबी करीम ﷺ की देहांत कीआधी शताब्दी पश्चात १०/ मुहर्रम ६१ हिजरी जुमा के दिन नवास -ए- रसूल हुसैन बिन अली रज़ियल्लाहु अन्हुमा की शहादत का वाक़िआ पेश आया। [२]

शिआ (रवाफ़िज़) ने हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के शहीदहोने का वाकेआ इस क़दर बढ़ा दिया कि इसे अपना मुकम्मल दीन व अक़ीदा बना लिया, अत: हर साल महुर्रम के महीना का आरंभ होने से पहले ही दुख व मातम, सोग, काले कपड़ों, मातमी जुलूसों, मृत्युशोक (अज़ाइ मजलिसों), करबलाई तक़रीरों, घोड़ों , झंडों, ताज़ियों, हुसैन जिंदाबाद, यज़ीद मुरदा बाद के नारों, मृतक के लिए विलाप (नौहा ख़ानियों) और सबीलों, शरबतों की तैयारियाँ होने लगती है!! और फिर आशूरा के दिन बल्कि पूरे आशूरा मे वह सारे काम किए जाते हैं कि उस महीना की हुरमतों को बिलकुलबरबाद कर दिया जाता है !!

---

[१]देखिए:ज़ादुल मआद:२/७२)।

[२] अल बिदायतुन निहाया: ८/२१६।

ज़ाहिर है कि इन चीज़ों की इस्लाम में कोई गुंजाइश है न माहे मुहर्रम और आ़शूरा से कोई तअ़ल्लुक, यह सरासर बिदआ़त व ख़ुराफ़ात है , क्योंकि शोक और सोग के सिलसिला में नबी करीम ﷺ का उपदेश है:

"لاَ يَحِلُّ لِامْرَأَةٍ تُؤْمِنُ بِاللهِ وَالْيَوْمِ الْآخِرِ، تُحِدُّ عَلَى مَيِّتٍ فَوْقَ ثَلاَثٍ إِلاَّ عَلَى زَوْجٍ أَرْبَعَةَ أَشْهُرٍ وَعَشْرًا" .

अल्लाह और आख़िरत का दिन पर ईमान रखने वाले किसी औरत के लिए हलाल नहीं कि किसी मय्यत पर तीन दिनों से ज़्यादा सोग मनाए, सिवाए शौहर की देहांत पर चार महीना दस दिन के।[१]

इसलिए सोग की यह मुद्दत सारे लोगों के लिए १३मुहर्रम सन्न ६१ हिजरी को, और हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु की बीवी के लिए २० जुमादल ऊला सन्न ६१ हिजरी को ख़त्म हो चुकी है, अब किसी के लिए हुसैन बिन अ़ली और अन्य शहीदों रज़ियल्लाहु अ़न्हुम व रहिमहुम की मौत पर ग़म मनाना हलाल नहीं।

भला क्या उम्मत के लिए शहादते हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हुका ग़मउमर, उसमान और अ़ली रज़ियल्लाहु अ़न्हुम की शहादत बल्कि वफाते रसूलﷺ के ग़म से भी बढ़ कर है, भला क्या आले बैते रसूल ने नबी करीम ﷺ और हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु के लिए धर्म से प्रमाणितअवधि के पश्चात ग़म मनाया है?आख़िर चौदा स़दी पहले से आज तक ग़म व मातमे हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु का यह सिलसिला रसूल ﷺके हुक्मका खुला विरोध और बिदअ़त नहीं तो और क्या है! और फिर यह ग़मव मातम की बिदअ़त ताज़िया, सबील, विलाप करना (नौहाख़ानी), बड़े सहाबा؄पर लानत मलामत करना आदि बिदआ़त की मुख्यकारण है, इसी कारण यह बिदअ़त ही नहीं, बिदअ़त पर बिदअ़त है!!

रसूले गिरामी ﷺ का उपदेश है:

---

[१]बुखारी: २/८१/१२९४ ।

"لَيْسَ مِنَّا مَنْ لَطَمَ الْخُدُوْدَ، وَشَقَّ الْجُيُوْبَ، وَدَعَا بِدَعْوَى الْجَاهِلِيَّةِ"

जो रुख़सारों पर चाटे मारे, गरेबान फाड़े और जाहिलियत की हाए वाए पुकारे (नौहा करे) वह हम में से नहीं।[१]

केवल इतना ही नहीं बल्कि ताज़िया से ज़रूरत के पूरी करने की दुआ की जाती है और हुसैन रज़ियल्लाहु अ़न्हु की अपने हाथ से नक़ली क़बर बना कर इसका तवाफ़ किया जाता है जो सरासर शिर्क है। और अफसोस कि इन बिदअ़ात व शिरकिय्यात में रवाफ़िज़ और शिअ़ा हज़रात के साथ साथ बड़ी संख्या में हमारे सुन्नी कहलाने वाले भाई भी भागीदार होते हैं, हालाँकि इमाम अहमद रज़ा स़ाहब ने ताज़िया बनाना और उसे पूजना तो एक तरफ ताज़िया को देखने, इस पर चढ़ाए हुए खाने को खाने, मुहर्रम में नौहा व विलाप आदि को स्पष्टर रूप में बिदअ़त, हराम और नाजाएज़ क़रार दिया है। [२]

२-शहादते हुसैन पर विलाप व मातम की तारीख़:

अस़लमें शहादते हुसैन पर विलाप व मातम की बिदअ़त का आरंभ चौथी शताब्दी हिजरी में हुआ। सबसे पहले ३५१ हिजरी में मुइज़्ज़िदु दौला अहमद बिन बोया दैलमी राफ़िज़ी ने तीनों ख़ुलफ़ा, और मुआ़विया रज़ियल्लाहु अ़न्हुम आदि पर लानत करने का हुक्म दिया और उसके हुक्म से बग़दाद की मस्जिदों के दरवाजों पर यह लेख लिखा गया:

"لَعَنَ اللهُ مُعَاوِيَةَ بْنَ أَبِيْ سُفْيَانَ وَلَعَنَ مَنْ غَصَبَ فَاطِمَةَ فَدَكَ - يَعْنُوْنَ أَبَا بَكْرٍ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ- وَمَنْ أَخْرَجَ الْعَبَّاسَ مِنَ الشُّوْرَى- يَعْنُوْنَ عُمَرَ، رَضِيَ اللهُ عَنْهُ- وَمَنْ نَفَى أَبَا ذَرٍّ- يَعْنُوْنَ عُثْمَانَ رَضِيَ اللهُ عَنْهُ- وَمَنْ مَنَعَ دَفْنَ الْحَسَنِ عِنْدَ جَدِّهِ -يَعْنُوْنَ مَرْوَانَ بْنَ الْحَكَمِ"

मुआ़विया बिन अबू सुफ़यान ﵁पर अल्लाह की लानत हो, और अबू बक्र ﵁पर जिसने फ़ातिमा﵂से फदक छीना, और उ़मर पर जिसने अ़ब्बास﵁ को मशवरा देनी वाली मजलिस

---

[१]बुख़ारी: २/८१/१२९४ ।

[२]देखिए: इरफाने शरीअ़त: १/१५, व रिसाला ताज़िया दारी, पृ. ४,११,१५, व अहकामे शरीअ़त: १/ ७१ ब-हवाला रूसूमाते मुहर्रम और सानहए करबला: हाफ़िज़ स़लाहुद्दीन युसूफ़ पृ.:२१ ।

से निकाला, और उसमान ﷺ पर जिसने अबू ज़र ﷺ को वतन से निकाला (निर्वासितकिया), और मरवान बिन हकम पर जिसने हसन ﷺको अपने दादा के पास दफनाने से रोका। (अल्लाह से मग़फ़िरत मांगते हैं और अल्लाह के ज़रिआ पनाह चाहतेहैं।)

जब इस राफ़िज़ी को मालूम हुआ कि अहले सुन्नत ने इस लेख को मिटा दिया है तो उसने मुआविया ﷺके नाम की स्पष्टता(स़राहत) और बाकी लोगों को बिला स़राहत अहले बैत ﷺपर ज़ुल्म करने वालों के नाम से लिखवाया।

इसी प्रकार इसने १८ जिल हिज्जा ३५१ हिजरी को ''ईदे ग़दीरे ख़ुम'' के नाम से एक ईद मनाने का हुक्म दिया, रेगिस्तान में राफ़िज़ीयों को ईद की नमाज़ भी पढ़वाई, और ख़ूब ढोल ताशे बजवाए, अस्ल में यह उसमान रज़ियल्लाहु अ़न्हु की वफ़ात की तारीख़ है, जिसकी खूशी में यह ईद मनाई जाती है, और आज रवाफ़िज़ के यहाँ ईदे ग़दीर का मरतबा ईदैन से भी ऊंचा है।[१]

इसी प्रकार इस व्यक्ति ने १०/मुहर्रम २५२ हिजरी को हुक्म दिया कि हुसैन ﷺ की शहादत के ग़म में दुकानें, ख़रीद वफ़रोख़्त और बाज़ार बंद कर दिए जाएं, ऐलानिया विलाप किया जाए, मृत्युगाथा के लिए प्रबंध किए हुए विशेष पोशाक पहने जाएँ और औरतें हुसैन ﷺके मातम में बालों को बिखेर कर, चेहरों पर कालक पोत कर, कपड़े फाड़े हुए और गालों पर तमांचे मारते हुए पूरे शहर में घूम घूम कर विलाप और मृत्युगाथा करें। राफ़िज़ियों ने ऐसा ही किया, परंतु सुन्नत और अहले सुन्नत को इसे रोकने की शक्ति न थी, क्योंकि शिआ़ राफ़िजीअधिक संख्या में थे और राजा उनके साथ था।[२]

इस प्रकार यह बिदअ़त रिवाज पा गई, अत: ४२१ हिजरी में करख़ियों ने दस मुहर्रम को नौहा व मातम किया, परंतु दूसरी मरतबा जन-साधारण के विरोध के कारण सहाबा को गाली

---

[१]देखिए: तारीख़ुत् त़बरी (११/४००), व अल-मुनतज़िम फित् तारीख़िल मुलूक वल-उमम (१४/१५१), व मिरअ़तुल जिनान व इबरतुल यक़ज़ान (२/२६१) व अल-बिदायतु वन-निहाया (११/२७६) व (११/२८८)।

[२]देखिए: अल-कामिल फित-तारीख़: ७/२४५), व अल-मुख़्तस़र फ़ी अख़बारिल बशर (२/१०४), व तारीख इब्ने खल्लदून (३/५२७), व मिरअतुल जिनान व इबरतुल यक़ज़ान (२/२६१)।

देना व लानत भेजना और सार्वजनिक बिदअ़त करने वाले के ह़क़्क़ में कुफ्र का फ़तवा दिया गया।[१]

इसी प्रकार मिस्र व क़ाहिरा के इलाके में भी यह बिदअ़त रिवाज पाईअत: मुसतअ़ल्ली (मृ.४९५ हिजरी) ने अपने राज शासन में ख़ूब धूम धाम से अ़ाशूरा के दिन विलाप व मातम का दिन मनाया, और यही रीति अल-मुईज्जु लिदीनिल्लिाह से लेकर अल-अ़ाज़िद सारे उ़बैदी फ़ातिमी मग़रिबी ख़ुलफ़ा का था।[२]

२-प्रतिष्ठितस़हाबा व स़हाबियात पर लाअ़नतमलामत और नफ़रत व अपशब्द के द्वारा मर्यादा व पवित्रता काउल्लंघन:

रवाफ़िज़ के आले बैत से प्रेम के नाम निहाद दावा के साथ उनकी स़हाबा दुश्मनी प्रसिद्ध है, यही कारण है कि उनकी तमाम मजलिसों समेत मुहर्रम के दस दिन और अ़ाशूरा की मातमी महफिलें स़हाबा व स़हाबिय्यात रज़ियल्लाहु अ़न्हुम कोकाफिर ठहराना, इनके बारे में अपशब्द, लानतवगाली से खाली नहीं होती, इसी कारणस़हाबा को बुरा भला कहना राफ़िज़िय्यत की एक निशानी है, अत: इमाम अ़ब्दुल्लाह बिन अहमद बिन हंबल रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:

"قُلتُ لِأَبِيْ: مَنْ الرافضِيّ؟ قَالَ: الّذِي يشتم رَجُلاً مِنْ أَصْحَابِ رَسُولِ اللهﷺ أو يتعرَّض لهم ما أراه على الإسلام".

मैंने अपने पिता से पूछा: राफ़िज़ी कौन है? फरमाया: जो रसूलुल्लाह ﷺके स़हाबा में से किसी को गाली दे या उनसे अपशब्दकहे, मैं उसे मुसलमान नहीं समझता![३]

और उनसे पूछे गए समस्या में है, फरमाते हैं:

"قلت لأبي: من الرافضي؟ قالَ: الذي يسب أبا بكر وَعُمر رضي الله عنهما".

---

[१]अल-मुनतज़िम फी तारीख़ि वल उमम (१५/२०४), व अल-बिदायह वन्निहायह (१६/७)।

[२]अन-नुजूमुज़-ज़ाहिर फ़ी मुलूक मिस्र वल-क़ाहिरा (५/१५३)।

[३]तारीख़ुल इस्लाम: इमाम ज़हबी: १८/८९ ।

मैंने अपने पिता से पूछा कौन है? फरमाया: जो अबू बक्र व उमर रज़ियल्लाहु अन्हुमा को गाली दे।[१]

अत: कलीनी ने अबू जाफर से नक़ल किया है कि उन्होंने फरमाया: "रसूलुल्लाह ﷺ के देहांत के पश्चात सारे लोग (सहाबा) मुरतद हो गए थे, सिवाए तीन लोगों के: मिक़दाद बिन असवद, अबू ज़र्र ग़िफ़ारी और सलमान फ़ारसी रज़ियल्लाहु अन्हुम के" ।[२][नऊज़ुबिल्लाह]

और तफसीरे कुम्मी में है कि अल्लाह तआला का उपदेश है:

﴿وَيَنْهَىٰ عَنِ ٱلْفَحْشَآءِ وَٱلْمُنكَرِ وَٱلْبَغْىِ﴾

में" ٱلْفَحْشَآءِ" "फ़हशा" से मुराद अबू बक्र, "وَٱلْمُنكَرِ" "मुनकर" से मुराद उमर और" وَٱلْبَغْىِ " "बग़य" से मुराद उसमान रज़ियल्लाहु अन्हुम हैं।

इसी प्रकार प्रसिद्ध शीआ किताब मिफ़ताहुल जिनान में है:

"اللهم صل على محمد وعلَى آل محمد، والعن صنمَي قريش وجِبْتَيهما وطاغوتَيهما وابنتيهما... الخ".

ऐ अल्लाह मुहम्मद ﷺ और आले मुहम्मद ﷺ पर रहमत नाज़िलफ़रमा, और कुरैश के दो बुतों, उसके दो शैतानों और तागूतों और उन दोनों की बेटियों पर लानत फ़रमा। (हम अल्लाह के ज़रिआ इस प्रकार के वाक्यों से पनाह मांगते हैं)।

अर्थात अबू बक्र व उमर और आईशा व हफ़्सा रज़ियल्लाहु अन्हुम।

इसी प्रकार आशूरा के दिन यह लोग एक कुत्ता लाते हैं और उसे उमर का नाम देते हैं, फिर उसे लाठी डंडे और पत्थर से मारते यहाँ तक कि उसकी मौत हो जाती है, फिर एक बकरी का बच्चा लाते हैं और उसे आईशा का नाम देते हैं, फिर उसके बालों को नोचते और जुतों से मारते हैं यहाँ तक कि उसकी मौत हो जाती है !!

---

[१]मसाएलुल इमाम अहमद, उनके बेटे अब्दुल्लाह की रिवायत, पृ:९९ ।

[२]अल-काफी: ८/२४५, और मजलिसी ने कहा हसन है।

[३] अन-नहल: ९०।

इसी प्रकार शीआ हज़रात ९रबीऊल अव्वल को एक ईद मनाते हैं, यह उमर फ़ारूक रज़ियल्लाहु अन्हु के क़ातिल अबू लू लू फ़िरोज़ मजूसी की ईद होती है, जिसे इन्होंने बाबा शुजाउद्दीन का लक़ब दिया है !!।

इसी प्रकार ख़ुमैनीसहाबाए किराम ﷺकी तौहीन करते हुए कहता है:

"मैं बड़ी साहस व हिम्मत से कहता हूँ की मौजूदा समय में ईरान की लाखों की आबादी रसूलुल्लाह ﷺ के युग के हिजाज़ वालों से बेहतरीन है"।[१]

अब प्रश्न यह है कि हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु (वफ़ात:६१ हिजरी) की मातमी महफ़ीलों में इन सहाबा व सहाबिय्यात रज़ियल्लाहु अन्हुम को गाली देने और उन पर लानत करने के जाएज़ होने का कारण क्या है, जो हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के शहादत से बरसों पहले इस संसार से कूच कर गए थे??

३-यज़ीद पर लानत भेजने की बिदअत:

इस माह की एक बिदअत यज़ीद बिन मुआविया रज़ियल्लाहु अन्हु पर लानत भेजने की भी है, क्योंकि इसके दौर में हुसैन रज़ियल्लाहु अन्हु के शहीद होने की अत्यधिक दुखदाईदुर्घटना घटित हुई, इसी प्रकार लानत करने के अन्य कारण भी बयान किए जाते हैं, उदाहारण के रूप में वह ज़ालिम था, नमाज़ों का छोड़ने वाला था,अनैतिक संबंध (ज़िना) और शराब आदि अन्य अभिलाषा (शहवतों) का दोषी था, एंव उसने अपनी फौज के लिए तीन दिनों तक मदीना को जाएज़ व मुबाह कर दिया था आदि। जब्कि:

पहला: यह सारी बातें जिन रावियों से कथित हैं वह आम तौर पर झुठे, मतरूक और राफ़िज़ी अक़ीदा के रिवायत करने वाले हैं, जैसा कि रिवायतों की जाँच-पड़ताल से मालूम होता है।

[१]अल-वसिय्यतुस सियासिय्यह: पृ.:२३। विस्तार के लिए देखिए: अश्शिआ हुमुल अदुव्व फ़ह-ज़रहुम: शहाता सक़र, पृ.:३०-३१)।

दूसरा: यज़ीद बिन मुआविया रज़ियल्लाहु अ़न्हु ताबई है और ताबई होने के उ़मूमी आदर व सम्मान में रसूल ﷺके शब्द में वह भी शामिल है।

तीसरा: यज़ीद और उसके पिता मुआवियह रज़ियल्लाहु अ़न्हु के लिए विशेषप्रतिष्ठा व प्रशंसासा़बित है, जैसा कि रसूलुल्लाह ﷺ का उपदेश है:

"أَوَّلُ جَيْشٍ مِنْ أُمَّتِي يَغْزُوْنَ الْبَحْرَ قَدْ أَوْجَبُوا... وَأَوَّلُ جَيْشٍ مِنْ أُمَّتِي يَغْزُوْنَ مَدِينَةَ قَيْصَرَ مَغْفُوْرٌلَهُمْ".

मेरी उम्मत का पहला लशकर जो समुद्रं में जंग करेगा उन्होंने जन्नत वाजिब कर ली है... और मेरी उम्मत का पहला लशकर जो शहरे क़ैसर (कुसतुनतुनिया) से जंग करेगा उनकी मग़फिरत हो चुकी है।[१]

ह़ाफ़िज़ इब्ने ह़जर फरमाते हैं:

"فِيْ هَذَا الْحَدِيْثِ مَنْقَبَةٌ لِمُعَاوِيَةَ لِأَنَّهُ أَوَّلُ مَنْ غَزَا الْبَحْرَ وَمَنْقَبَةٌ لِوَلَدِهِ يَزِيْدَ لِأَنَّهُ أَوَّلُ مَنْ غَزَا مَدِيْنَةَ قَيْصَرَ"

इस ह़दीस़ में मुआवियह रज़ियल्लाहु अ़न्हु की फ़ज़ीलत है क्योंकि उन्होंने सबसे पहले समुंद्र में जंग की, और उनके बेटे यज़ीद की भी फ़ज़ीलत है क्योंकि उन्होंने सबसे पहले शहर क़ैस़र से जंग की।[२]

यह समुंद्री जंग मुआवियह रज़ियल्लाहु अ़न्हु ने सन्न २८ हिजरी में और कुसतुनतुनिया से यज़ीद ने सन्न ५३ हिजरी में की, पहली जंग उ़समान और दूसरी मुआवियह रज़ियल्लाहु अ़न्हुमा के शासन काल में हुई।

चौथा: यज़ीद के सिलसिले में सबसे संतुलित दृष्टि वह है जो शोधकर्ताउलमा का है,अत: शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया रहिमहुल्लाह फरमाते हैं:

---

[१]स़हीह बुख़ारी: (४/४२/२९२४) ।

[२]फ़त्हुलबारी- इब्नेहजर:(६/१०२), व (११/७७) ।

"بَلِ الْحَق فِيهِ أَنه كَانَ ملكا من مُلُوك الْمُسْلِمِيْن لَهُ حَسَنَات وَلَه سَيِّئَات، وَالْقَوْل فِيْهِ كَالْقَولِ فِي أَمْثَاله مِنْ الْمُلُوك، لاَ نحبه وَلاَ نسبه"

यज़ीद के बारे में न्याय यह है कि वह मुसलमानों के बादशाहों में से एक बादशाह था, उसकी नेकियाँ भी हैं और गुनाह भी, उसके बारे में वही बात है जो इस जैसे अन्य लोगों के बारे में, कि हम इसे प्रेम करते हैं न उसे गाली देते है।[१]

और इमाम ज़हबीफ़रमाते हैं:

"وَيَزِيْدُ مِمَّنْ لاَ نَسُبُّهُ وَلَا نُحِبُّه، وَلَهُ نُظَرَاءُ مِنْ خُلَفَاءِ الدَّوْلَتَيْنِ، وَكَذَلِكَ فِي مُلُوكِ النَّوَاحِي، بَلْ فِيْهِمْ مَنْ هُوَ شَرٌّ مِنْهُ"

यज़ीद उन लोगों में से है जिसे हम गाली देते हैं न इस से प्रेम करते हैं, दोनों हुकुमतों (अर्थात बनु उमय्या व बनु अ़ब्बासिया) में उस जैसे बहुत से लोग गुज़रे हैं, इसी प्रकार आस पास के बहुत से राष्ट्र के बादशाहों में भी, बल्कि इनमें तो इससे कहीं ज़्यादा बहुत बेकार लोग थे।[२]

इसीलिए यज़ीद पर लानत करने के बजाए हमें संतुलितदृष्टि अपनाना चाहिए, विशेष रूप से जब्कि विशिष्ट व्यक्ति पर लानत अहले सुन्नत व जमाअ़त के दृष्टि के ख़िलाफ़ भी है। और अल्लाह तआलासबसेज़्यादा जानने वाला है।

४-आनंद व प्रसन्नता और खुशी की बिदअ़त (नवासिब):

माहे मुहर्रम में एक बिदअ़त रवाफ़िज़ की बिदअ़त के ख़िलाफ़ नवासिब यानी आले बैते रसूल ﷺ के विरुद्धशत्रुता खड़ी करने वालों की है, यह अ़ली, हुसैन बिन अ़ली और आले बैत रज़ियल्लाहु अ़न्हुम से नफरत रखने वाले हैं, इन में अधिक संख्याख़्वारिज की है, उन्होंने आ़शूरा को हर्ष व उल्लास का दिन बना लिया है, अत: यह उस दिन नए कपड़े पहनते हैं, सुरमा और मेहंदी लगाते हैं, बाल-बच्चों पर ख़ूब ख़र्च करते हैं, इस दिन के लिए क़ुरबानी का

---

[१]मुख़्तसर अल-फ़तावा अल-मिस्रिय्या, पृ. २१०, एंव देखिए: मजमूउल फ़तावा: ४/४८७ ।

[२]सियरु आअ़लामिन नुबला: ४/३६।

गोश्त भंडार करते हैं और मामूल से ज़्यादा भाँति भाँति प्रकार के खाने पकाते हैं, एक दूसरे से ख़ूब मिलते और सलाम व मुसाफ़ा करते हैं, मसाजिद व मज़ारात की ज़ियारत करते हैं, और साल भर की आवश्यकचिजेंउसी दिन ख़रीदते हैं, आदि।

इन का प्रकट होना रसूल ﷺ के युग में हो गया था, जिन्होंने रसूलुल्लाह ﷺके फ़ैसले पर आपत्ति करते हुए कहा था: “ऐ मुहम्मद अल्लाह से डरिए”, और इंसाफ से काम लिजिए क्योंकि आप इंसाफ नहीं कर रहे हैं ”, जैसा कि स़हिहैन आदि की रिवायतों में है। एंव आपﷺ ने स़हाबा रज़ियल्लाहु अ़न्हुम को उनकी पहचान बताई थी “कि तुम अपनी इबादतों को इनके मुक़ाबलेमें तुच्छसमझोगे, वह क़ुरआन पढ़ेंगे, लेकिन इनके हलक़ से आगे न जाएगा, वह धर्म से ऐसे निकल गए होंगे जैसे सबसेतेज़ तीर शिकार से पार हो जाता है, एंव वह मुसलमानों को क़तल करेंगे बुत परस्तों को छोड़ देंगे।”[१]

शैख़ुल इस्लाम इब्ने तैमिया ने लिखा है कि कूफा में दो प्रकार के लोग थे: एक शीआ़ रवफ़िज़ जो हुसैन और आले बैत के सहायक व पक्षपाती थे और उनका मुखिया मुख़तार बिन ऊ़बैद कज़्ज़ाब था, और दूसरे अ़ली और उनकी औलाद से नफरत रखने वाले, जिनका सरदारहज्जाज बिन युसुफ़ स़क़फ़ी था। और इन्ही दोनों के बारे में रसूलुल्लाह ﷺ की भविष्य वाणी थी:

"أَنَّ فِي ثَقِيفٍ كَذَّابًا وَمُبِيرًا".

स़क़ीफ़ में एक झूठा और एक मार-काट मचाने वाला पैदा होगा।

अस्माबिन्ते अबू बक्र रज़ियल्लाहु अ़न्हुमाफ़रमाती हैं: झूठे (मुख़्तार बिन ऊ़बैद) को तो हमने देख लिया है, और मेरा ख़्याल है कि मार-काट मचाने वाला यही (हज्जाज बिन युसुफ़) है।[२]

---

[१]बुख़ारी: ३३४४, एंव मुस्लिम: १०६४ ।
[२] मुस्लिम: २५४५।

नि:संदेह रवाफ़िज़ व नवासिब [नासिबी संप्रदाय के लोग हजरत अ़ली को न माननेवाले बल्कि उनके विरुद्धहैं]दोनों के आमाल इफ़रातवतफरित(आधिक्यएंवन्यूनता)पर निर्भरहैं जो सरासर बिदअ़त व ख़ुराफ़ात हैं,इन तमाम चीज़ों का माहे मुहर्रम बल्कि इस्लाम ही से कोईसंबंध नहीं है, और अल्लाह तआ़लासबसेज़्यादा जानता है।[१]

यह किताब व सुन्नत के दलाएल और सलफ़की समझ की रौशनी में मुहर्रम के महीने, उसकी हुरमत, प्रतिष्ठा व सम्बंधित समस्या और बिदआ़त व मुनकरात से सम्बंधित संक्षेप में कुछ बाते हैं।

अंत में अल्लाह तआ़ला से दुआ़ है कि वह सारे मुसलमानों को इस महान महीना की हुरमत व आदर का लिहाज़ रखने, इसके अहकाम व मसाएल पर अ़मल करने विशेष रुप से आ़शूरा के रोज़ा का ध्यान रखना और साथ ही इस माह में प्रचलित बिदआ़त और शिक्र वाले कामों से पूरे तौर परबचने की तौफ़ीक़ अ़ता फरमाए, आमीन।

وصلى الله وسلم على نبينا محمد وعلى آله وصحبه أجمعين.

[१] विस्तार के लिए देखिए: मिनहाजुस् सुन्नह ४:५५४, एंव अल-बिदउल हौलिय्या, पृ.:१११।